1 कृष्ण-भक्ति

मीराबाई

(जन्म : सन् 1498, मृत्यु : सन् 1563 ई.)

मीराबाई का जन्म जोधपुर के कुकड़ी गाँव में राव रत्नसिंह राठौर के परिवार में हुआ था । उनका विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के कुँवर भोजराज से हुआ था । विवाह के कुछ साल बाद पहले पति, फिर पिता और एक युद्ध के दौरान श्वसुर का भी देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने अपना अधिकांश समय श्रीकृष्ण भक्ति और साधु-संतों के सत्संग में बिताना शुरू किया। भौतिक जीवन से निराश मीरा ने अपना घर त्याग दिया और वृंदावन में डेरा डाल पूरी तरह कृष्ण की भक्तिभावना में लीन हो गई। जीवन के उत्तरार्ध में द्वारका में ही उनका स्वर्गवास हुआ।

मीरा की भक्ति मूलतः माधुर्यभाव की है। उनके पदों में कहीं-कहीं दास्य-दैन्यभाव की छाया भी परिलक्षित होती है। मीरा के द्वारा गाये गए विरह के गीत भारतीय साहित्य की अनमोल निधि हैं। मीरा के पद सम्पूर्ण भारत में प्रचलित हैं। मीरा हिन्दी और गुजराती दोनों की कवयित्री मानी जाती हैं। उनके पदों की भाषा में राजस्थानी ब्रज और गुजराती का मिश्रण पाया जाता है। संत रैदास की शिष्या मीरा की कुल सात-आठ कृतियाँ ही उपलब्ध हैं। उनकी रचनाएँ 'मीरा पदावली' नाम से उपलब्ध हैं।

प्रथम पद में कृष्ण के वियोग से तड़पती मीरा के मनोभावों का सटीक चित्रण किया गया है। कृष्ण के बगैर मीरा को कुछ भी अच्छा नहीं लगता। कृष्ण का दर्शन पाने को व्याकुल मीरा उनके दर्शन न होने पर बहुत दुःखी हैं।

दूसरे पद में कृष्ण गोपियों तथा राधा के साथ ब्रज में होली खेलते हैं उस अवसर का मीरा ने बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है।

---

(1)

हरि बिन कछु न सुहावै।
परम सनेही राम की नीति ओलूँरी आवै।
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछु न सुहावै
आवण कह गए अजहुँ न आये; जिउड़ा अति उकलावै।
तुम दरसण की आस रमैया, कब हरि दरस दिलावै।
चरण कँवल की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुःख पावै।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, आणंद बरण्यूँ न जावै।

(2)

होरी खेलत हैं गिरधारी।
मुरली चंग बजत डफ न्यारौ, संग जुवति ब्रजनारी।
चंदन केसर छिरकत मोहन अपने हाथ बिहारी।
भरि भरि मूठि गुलाल लाल चहुँ देत सबन पै डारी।
छैल छबीले नवल कान्ह संग स्यामा प्राण पियारी।
गावत चार धमार राग तहँ दै दै कल करतारी।
फागु जु खेलत रसिक साँवरी बाढ़यौ रज ब्रज भारी।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर मोहनलाल बिहारी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ओलूँरी माफिक, अनुकूल **अजहुँ** आज भी, अभी भी **जिउड़ा** जीव, मन, हृदय **उकलावै** बेचैन होता है **चरण कँवल** चरण रूपी कमल **चंग** चमड़ा मढ़ा एक बाजा, जो हाथ से बजाया जाता है **डफ** चमड़ा मढ़ा एक बाजा, जो लकड़ी से बजाया जाता है यह चंग से बड़ा होता है। **छिरकत** छिड़कते हैं **छैलछबीला** अत्यंत सुंदर, बहुत आकर्षक **धमार** फाग या होली गीत का एक राग ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) 'ओलूँरी' का क्या अर्थ है :-

(क) विरोधी (ख) माफिक (ग) कौतूहल (घ) विनय

(2) किसके बिना मीरा को कुछ भी नहीं सुहाता?

(क) राम (ख) कृष्ण (ग) हरि (घ) शंकर

(3) कृष्ण अपने हाथों से गोपियों पर क्या डालते हैं?

(क) रंग (ख) अबीर (ग) गुलाल (घ) चंदन-केसर

(4) कान्ह के संग कौन विराजमान है?

(क) ग्वालबाल (ख) यशोदा (ग) स्यामा अर्थात् राधा (घ) नंद

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) मीरा को किसने आने के लिए कहा है?

(2) कृष्ण क्या कर रहे हैं?

(3) कृष्ण के साथ कौन-कौन होली खेल रहा है?

(4) कृष्ण किस राग में गीत गा रहे हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) मीरा का हृदय क्यों व्याकुल हो उठा है?

(2) मीरा क्यों दुखी हैं?

(3) कृष्ण कैसे होली खेल रहे हैं?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए :

(1) प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

(2) ब्रज में कृष्ण द्वारा होली खेलने का वर्णन कीजिए।

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्तिः** मीरा के अन्य पदों को याद कर कक्षा में सुनाइए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्तिः** मीरा के पदों के कैसेट अथवा सी.डी. प्राप्त कर सुनिए और कक्षा में सुनाइए।